वो आदमी जिसे किताबों से प्यार था

बहुत पहले आयरलैंड में कोलंबा नाम का एक आदमी रहता था जिसे किताबें बेहद पसंद थीं. चूँकि किताबें बिल्कुल एक नई चीज थीं, इसलिए कोलंबा को उन्हें खोजने में हमेशा मुश्किल होती थी. और जब उसे कोई नई किताब मिलती, तो उसे उसकी नक़ल अपने हाथ से लिखकर उतारनी होती थी. लेकिन कभी-कभी लोग अपनी पुस्तकें दूसरों से साझा नहीं करना चाहते थे.

लोंगारद को बेहद जलन होती थी. वो कोलंबा को अपनी पुस्तक कभी देखने तक नहीं देता था.

फिनियन, कोलंबा का अच्छा दोस्त था. उसने कोलंबा को अपनी नई किताब देखने को दी, पर किताब की नक़ल करने की अनुमति नहीं दी.

लेकिन एक रात अंधेरे में ...

इससे ही नाटक शुरू होता है और खत्म होने से पहले, उच्च राजा और आयरिश लोगों की सेनाएं इसमें हिस्सा लेती हैं.

संत कोलंबा, संतों में सबसे मानवीय और प्यारे लोगों में से एक था. कम-से-कम, वो सभी पुस्तक प्रेमियों का संरक्षक संत था. उनकी कहानी, कुछ-सच, और कुछ-किंवदंती है, पर वो कहानी एक्शन और हास्य से भरपूर है. वो बिल्कुल उस तरह की कहानी है जिसे खुद कोलंबा अपनी भव्य आवाज़ में लोगों को सुनाना चाहता. इस कहानी के बेहद सुन्दर चित्र हैं.
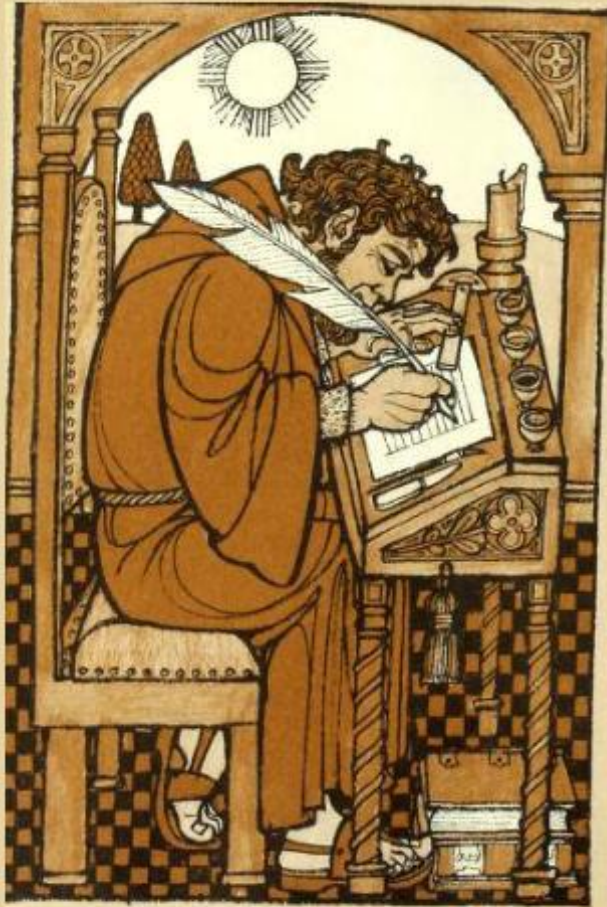
वो आदमी जिसे किताबों से प्यार था
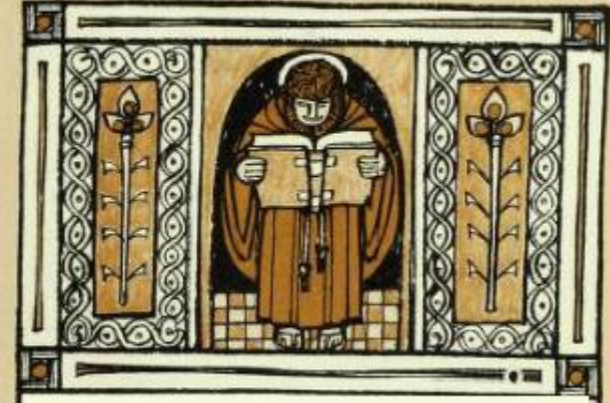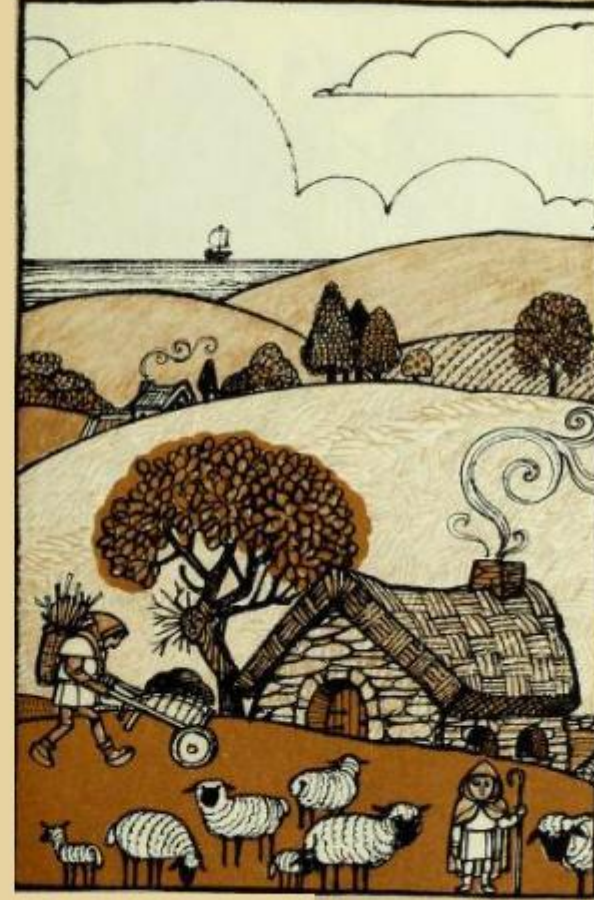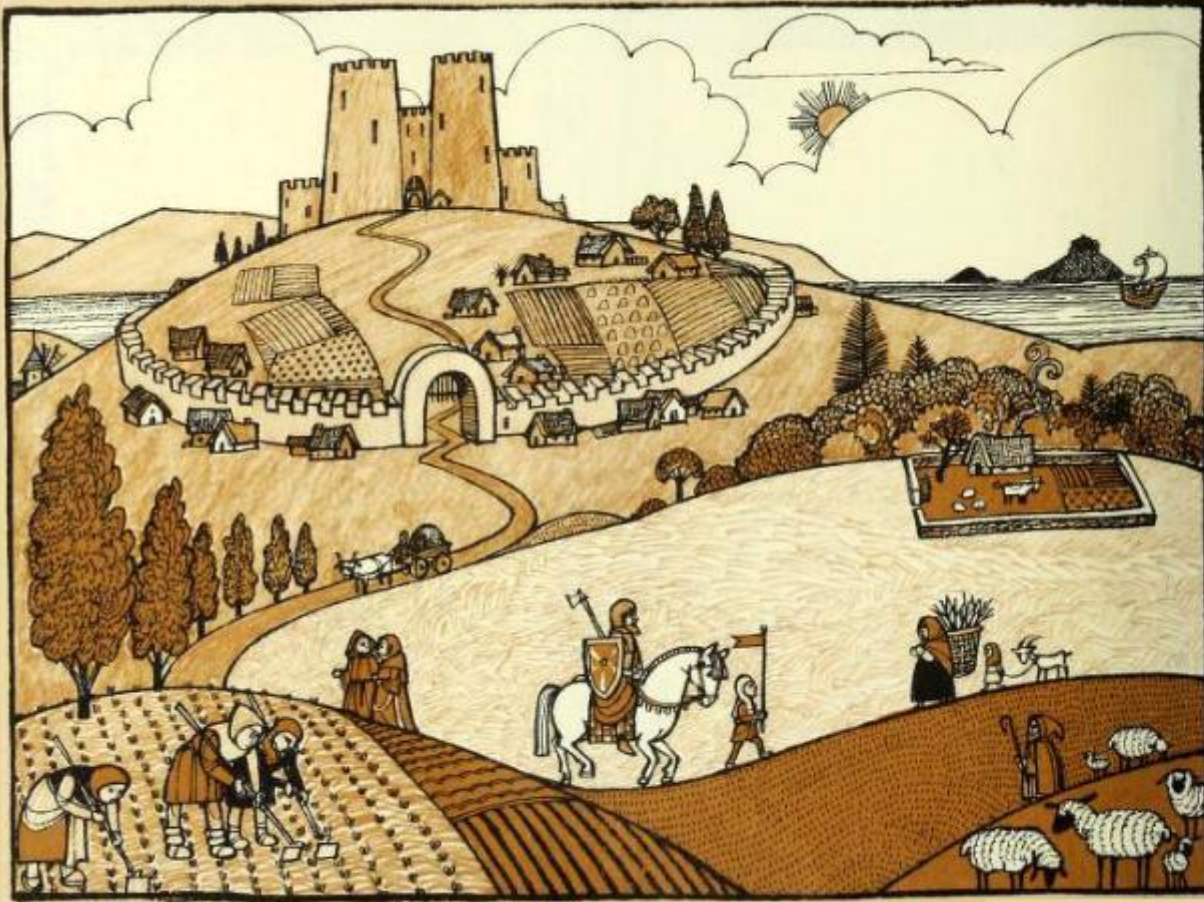
बहुत समय पहले आयरलैंड में कोलंबा नाम का एक आदमी रहता था जो किताबों से प्यार करता था. वास्तव में, वह पुस्तकों के लिए पागल था, लेकिन आयरलैंड में किताबें तब एक बिल्कुल नई चीज थीं. बड़ी मुश्किल से ही उसे कोई किताब हाथ लगती थी. अगर कोई नई किताब पढ़ना चाहता था, तो उसे किताब को खोजने के लिए बहुत लम्बा सफर करना पड़ता था. यदि वो आदमी किताब का मालिक होना चाहता था, तो उसे उसे अपने हाथ से उसकी नक़ल करनी होती थी.

अब अगर कोलंबा को सिर्फ कहानियां चाहिए होतीं, तो उसमें कोई परेशानी नहीं थी. कहानी सुनाने वाले "बार्ड" यानि घुमन्तु (भांड या विदूषक) हमेशा से गांव-गांव घूमकर लोगों को कहानियां सुनाते थे. वे भव्य और बढ़िया पुरानी कहानियां होती थीं, जिनका एक-एक शब्द उन्हें रटा होता था और वर्षों तक उन्होंने उन कहानियों को सुनाने का अभ्यास किया होता था. कहानी सुनाने के बाद "बार्ड" एक सोने का कटोरा जो उनके भाले की जंजीर से लटका होता था अपने श्रोताओं की नाक के नीचे लटकाते थे और लोग उसमें सिक्के डालते थे. यदि लोग पर्याप्त मात्रा में सिक्के गिराते, तो "बार्ड" उनके नाम की प्रशंसा में छोटे गीत गाते थे. अगर कंजूस लोग कुछ भी सिक्के दान में नहीं देते तो "बार्ड" उनकी कंजूसी पर गीत रचते और गाते थे. इसलिए लोग अच्छा दान देकर "बार्ड" को खुश रखने की कोशिश करते थे.

कोलंबा को पुरानी कहानियों से बेहद प्यार था और क्योंकि वह एक बड़े सरदार का बेटा था, उसने खुद एक प्रसिद्ध "बार्ड" से कहानी सुनाने की शिक्षा ली थी. लेकिन एक बार जब कोलंबा ने पढ़ना सीख लिया, फिर किताबों के अलावा उसे और कुछ नहीं सूझता था.

कोलंबा ने सब कुछ बहुत जल्दी सीख लिया था. जब वो बहुत छोटा था, तब एक नबी, एक रात, सितारों का अध्ययन कर रहा था. उसने आकाश में एक संदेश देखा. “कोलंबा को अब पढ़ना शुरू करना चाहिए”, नबी ने कहा. उसके बाद वर्णमाला के अक्षरों को एक केक के अंदर पकाया गया और कोलंबा ने उस केक को खाया. अक्षरों को पचाने के बाद कोलंबा ने उनका अभ्यास करना शुरू किया. फिर कठिन अभ्यास के बाद वो एक मोम की स्लेट पर शब्द लिखने लगा और उन्हें पढ़ने लगा. कोलंबा के ज़माने में केवल कुछ ही लोग पढ़ना जानते थे और कई लोगों को पढ़ने का विचार ठीक भी नहीं लगता था. यदि कोई आदमी पढ़ना सीख जाएगा फिर उसकी याददाश्त का क्या होगा? अगर कहानियां किताबों में कैद होंगी फिर उन्हें कोई याद क्यों करेगा? उसके बाद किसी को कहानी सुनाने वाले "बार्ड" की ज़रुरत ही नहीं होगी? लेकिन कोलंबा के अनुसार आयरलैंड में "बार्ड" और किताबों, दोनों के लिए पर्याप्त स्थान था. और उन दोनों को सम्मानित किया जाना चाहिए था.

कोलंबा बड़े होकर एक बुलंद आवाज वाला और एक बड़े डील-डौल वाला आदमी बना. उसकी ज़ोरदार आवाज़ को एक मील दूर से सुना जा सकता था. उसे जो भी अच्छा लगता था, उसे वो पूरे दिल से करता था. किताबों के अलावा, कोलंबा को आयरलैंड से दिली लगाव था. आयरिश घास के हरेक पत्ते से, आयरलैंड के हर वर्ग इंच, चप्पे-चप्पे से उसे प्यार था. वो चर्च से भी प्यार करता था. चर्च के प्रति अपना प्यार दर्शाने के लिए कोलंबा ने सांसारिक तौर-तरीके छोड़ दिए थे. वो घोड़ों के बालों से बुना एक खुरदरा चोगा अपने बदन पर पहनता था. वो तकिए की जगह एक पत्थर का प्रयोग करता था.
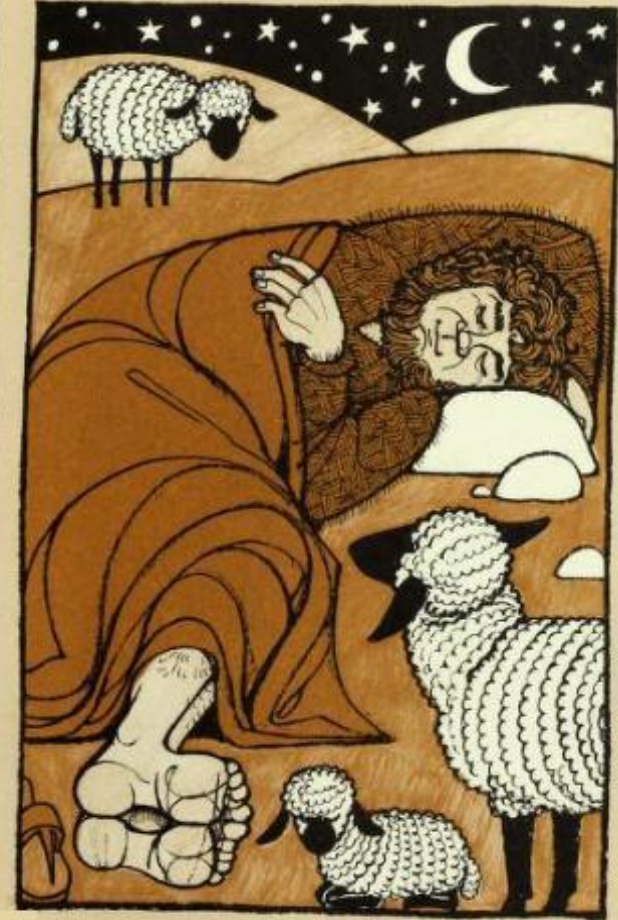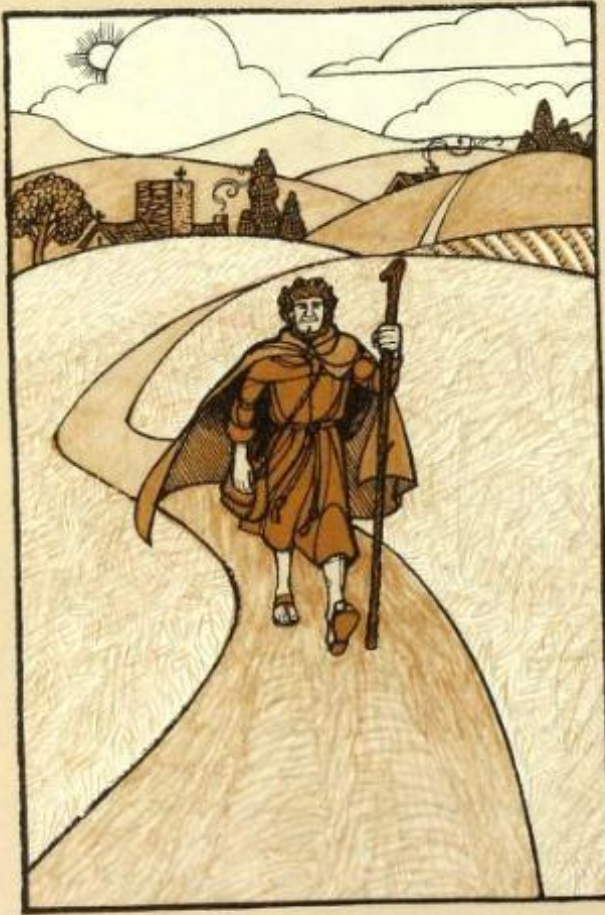
लेकिन न तो आयरलैंड और न ही चर्च कोलंबो के पुस्तकों के प्यार के रास्ते में आड़े आया. वो आयरलैंड में मौजूद हर किताब को पढ़ने और उसे कॉपी (नक़ल) करने के लिए कटिबद्ध था. चूंकि किताबें आमतौर पर मठों में होती थीं, इसलिए कोलंबा अपना अधिकांश समय एक मठ से दूसरे मठ जाने में बिताता था. पर एक बड़ी मुसीबत थी. मठों में भिक्षु कभी-कभी अपनी पुस्तकों से ईर्ष्या करते थे. उन्हें पुस्तक की केवल एक ही प्रति पसंद थी और वो नहीं चाहते थे कि कोई उनकी पुस्तक की नक़ल बनाए. इसलिए जब वे कोलंबा को सड़क पर आते हुए देखते, तो वे सबको चेतावनी देते. "जल्दी करो, नई किताबें छिपाओ," वे कहते. और जब कोलंबा मठ में पहुंचता, तो भिक्षु दुख से अपना सिर हिला देते और कहते, "नहीं, यहां पर कोई नई किताब नहीं है."

एक दिन कोलंबा ने सुना कि लोंगाराड नाम के एक उपदेशक के पास में एक किताब थी जिसे कोलंबा ने कभी नहीं देखा था. फिर कोलंबा तुरंत उस उपदेशक के पास पहुंचा. हां, लोंगराद ने कहा, उसके पास वो किताब थी, लेकिन वो कोलंबा को उसे देखने तक नहीं देगा. कोलंबा ने उपदेशक से बहुत आरज़ू-मिन्नत की, लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ. हर बार उपदेशक ने "न" ही कहा. फिर कोलंबा को लाल-गर्म गुस्सा आया, जो उसके बालों की जड़ों तक पहुंचा. "तुम्हारी किताबें अब तुम्हारा कोई भला नहीं करेंगी!" कोलंबा ने उसे बद-दुआ दी, और फिर कोलंबा वहां से चला. कंटीला चोगा उसकी चमड़ी से लगातार चुभता रहा.
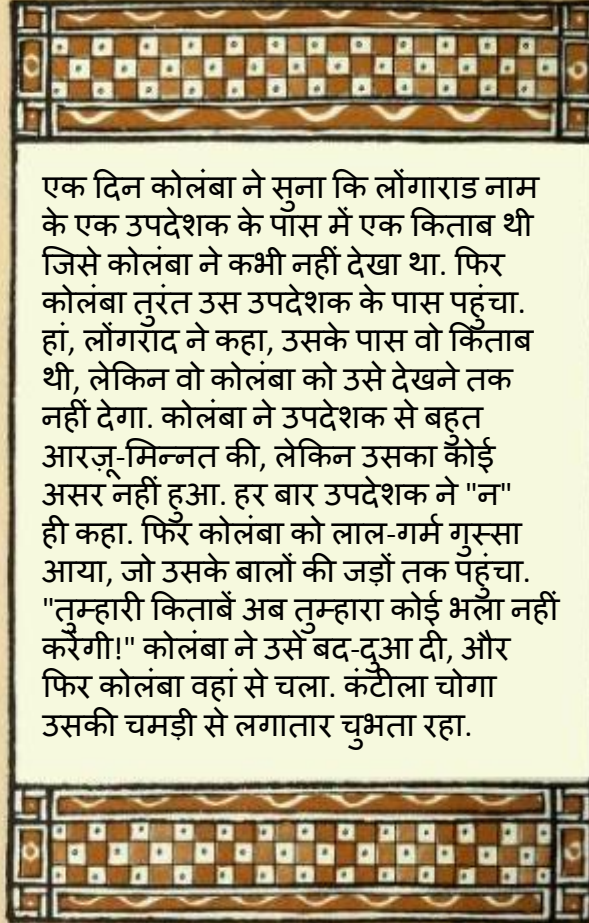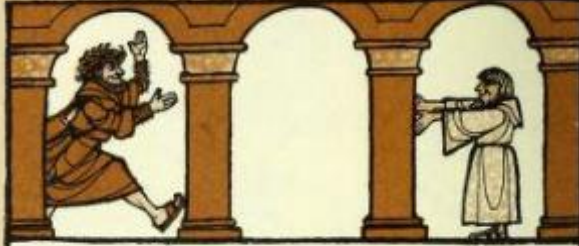
कुछ समय बाद कोलंबा का एक अच्छा दोस्त फिनियन, रोम की यात्रा से वापस आते समय एक नई किताब अपने साथ लाया. चूंकि फीनियन उसका दोस्त था, इसलिए कोलंबा बहुत उत्साहित होकर अपनी स्याही, कलम और चर्मपत्र के साथ फीनियन के मठ की ओर चला. उसने अपनी पालतू क्रेन को भी साथ में लिया. फिनियन ने अपने मित्र कोलंबा का मठ में स्वागत किया. उसने कहा, निश्चित रूप से, तुम उस पुस्तक को देख सकते हो. लेकिन तुम उसकी नकल नहीं बना सकते हो

उस रात कोलंबा और उसकी क्रेन लाइब्रेरी में गए. वहां किताब को एक पत्थर की दीवार में बंद एक चेन के अंत में रखा गया था. बड़े ध्यान से कोलंबा ने किताब खोली और भगवान की प्रशंसा की. वो क्या किताब थी! मछलियां और फूल उस पुस्तक के अक्षरों में अपना घोंसला बनाए थे. सुन्दर सर्पिल गोल अक्षर हाशिये में फैले थे. काले और बोल्ड प्रिंट में छोटे गोल-गोल अक्षर, पुस्तक में छोटे दोस्त पक्षियों की तरह कंधे से कन्धा मिलाकर बैठे थे.

"देखो, क्रेन," कोलंबा फुसफुसाया, "इस किताब में कितना सौंदर्य भरा है! वो कितनी अभूतपूर्व है!"

अगली रात जब मठ में सभी सो रहे थे, कोलंबा अपनी कलम और चर्मपत्र के साथ पुस्तकालय में गया और किताब की नकल करने लगा. अगली रात भी. और उससे अगली और अगली रात भी. उसके पास सुन्दर सर्पिल गोले बनाने का समय नहीं था, लेकिन उसने पुस्तक के सारे अक्षर और शब्द उतारे. अब बस केवल एक रात का काम बाकी था.

पर उस रात फिनियन को शक हुआ. उसने एक ख़ुफ़िया को पुस्तकालय में भेजा. निश्चित रूप से दूत को एक पुस्तक नहीं, बल्कि दो दिखाई दीं, और उनके बीच उसने मोमबत्ती की रोशनी में कोलंबा को बैठा हुआ पाया. फिर कोलंबा और फिनियन के बीच बड़ी बहस हुई. फिनियन ने कहा कि उसने कोलंबा को अपनी किताब की नकल करने की अनुमति नहीं दी थी, इसलिए कॉपी की गई किताब अब उसकी थी. पर कोलंबा ने कहा कि क्योंकि उसने अपने हाथों से नक़ल की थी इसलिए प्रतिलिपि उसकी थी. दोनों आदमी अपने तर्कों से एक-इंच भी पीछे हटने को तैयार नहीं थे. इसलिए अंत में वे न्याय के लिए आयरलैंड के उच्च राजा के पास गए.

वे दोनों उच्च राजा के सामने खड़े थे. सबसे पहले एक ने अपना तर्क दिया और फिर दूसरे ने.
उच्च राजा अपने सिर को कभी बाईं ओर झुकाता और कभी दाहिनी ओर झुकाता. उसने दोनों पक्षों के तर्कों को तौला.

अंत में उच्च राजा ने फिनियन के पक्ष में अपना फैसला सुनाया. "किसी गाय का बछड़ा उसका होता है," उच्च राजा ने कहा, "और इसलिए किसी किताब की नक़ल भी किताब के मालिक की ही होगी." निर्णय सुनकर कोलंबा का गुस्सा फूट पड़ा. "यह सरासर गलत निर्णय है," वो चिल्लाया, "और मैं उसका बदला ज़रूर लूँगा."

उसके बाद कोलंबा सीधा उन पहाड़ों के लिए रवाना हुआ जहां उसके कुनबे के लोग रहते थे. उसके पिता की सेवा में कई योद्धा थे, जो सभी वीर थे और उनमें से कोई भी युद्ध करने से पीछे नहीं हटने वाला था. कोलंबा ने उन्हें अपनी कहानी फटाफट सुनाई. उसके बाद कोलंबा के पिता की सेना, उच्च राजा की सेना से लड़ने के लिए तुरंत रवाना हुई. कोलंबा अकेले में प्रार्थना करने लगा. पता नहीं वो प्रार्थना थी या कोलंबा के पिता के सैनिकों की वीरता? लेकिन अंत में उच्च राजा बुरी तरह से हारा. उच्च राजा के तीन हजार सैनिक मरे और कोलंबा का सिर्फ एक आदमी मरा. इतना ज़रूर था, कोलंबा ने बड़ी सफलता से अपना बदला लिया.

फिर भी कोलंबा ने खुद को एक विजेता महसूस नहीं किया. युद्ध खत्म होने के बाद कोलंबा अपने खुरदुरे चोगे में खुद को बहुत दयनीय महसूस करने लगा. तीन हज़ार और एक सैनिक जो कल तक जीवित थे, आज मर गए थे. और इतनी तबाही सिर्फ एक किताब के कारण! कोलंबा का व्यवहार दुनिया के आम आदमी की तरह था, चर्च के नेक आदमी की तरह नहीं और अब उसे खुद पर शर्म आ रही थी. वो अपने आपको इसके लिए कड़ी-से-कड़ी सजा देगा जिसकी वो कल्पना कर सकता था. इसलिए कोलंबा ने आयरलैंड छोड़ने की और फिर अपने प्यारे वतन को कभी नहीं देखने की कसम खाई.

दिल में गहरे दुख के साथ कोलंबो ने अपने दोस्तों से, अपनी प्यारी मातृभूमि, उन किताबों से जिनकी उसने नकल बनाई थी अलविदा कहा. फिर अपनी नाव, डेवी-रेड में चढ़कर अपने बारह साथियों और अपनी पालतू क्रेन के साथ, वो सजा लेने के लिए उत्तर की ओर एक अज्ञात द्वीप के लिए रवाना हुआ.

उसके पास चुनने के लिए कई द्वीप थे. कोलंबा पहले एक पर रुका, फिर दूसरे पर, लेकिन हर बार जब उसने दक्षिण की ओर देखा, तब उसे वहां से आयरलैंड नज़र आया. फिर वो काफी दूर गया, लेकिन वहां जब वो एक पहाड़ी पर चढ़ा तो उसे अपना प्रिय आयरलैंड, हमेशा की तरह हरा दिखाई दिया. अंत में कोलंबा इओना द्वीप पहुंचा. वहां वो सबसे ऊंची पहाड़ी की चोटी पर चढ़ा, और उसने दक्षिण की ओर देखा, पर उसे इस बार सिर्फ समुद्र ही नज़र आया. अब कोलंबा को अपना नया घर मिल गया था.
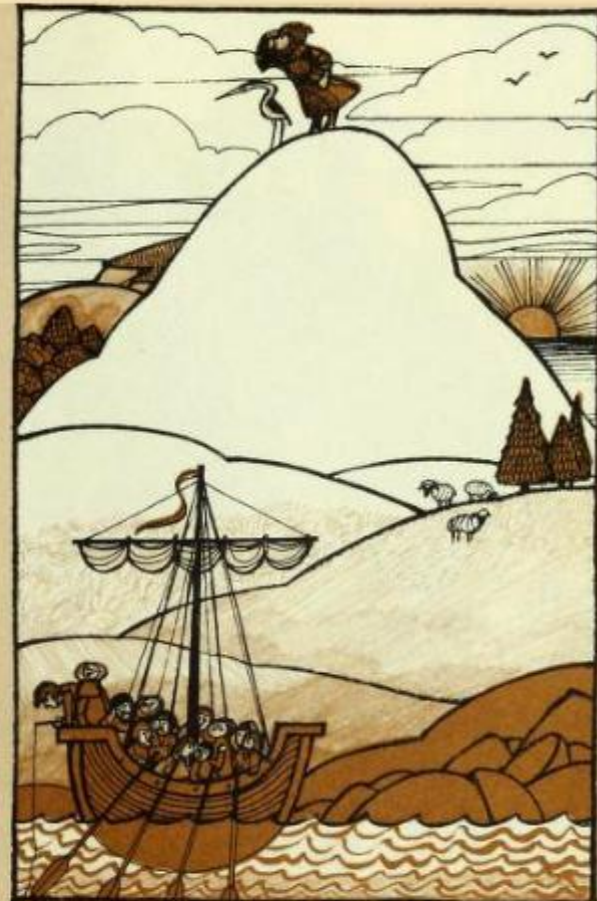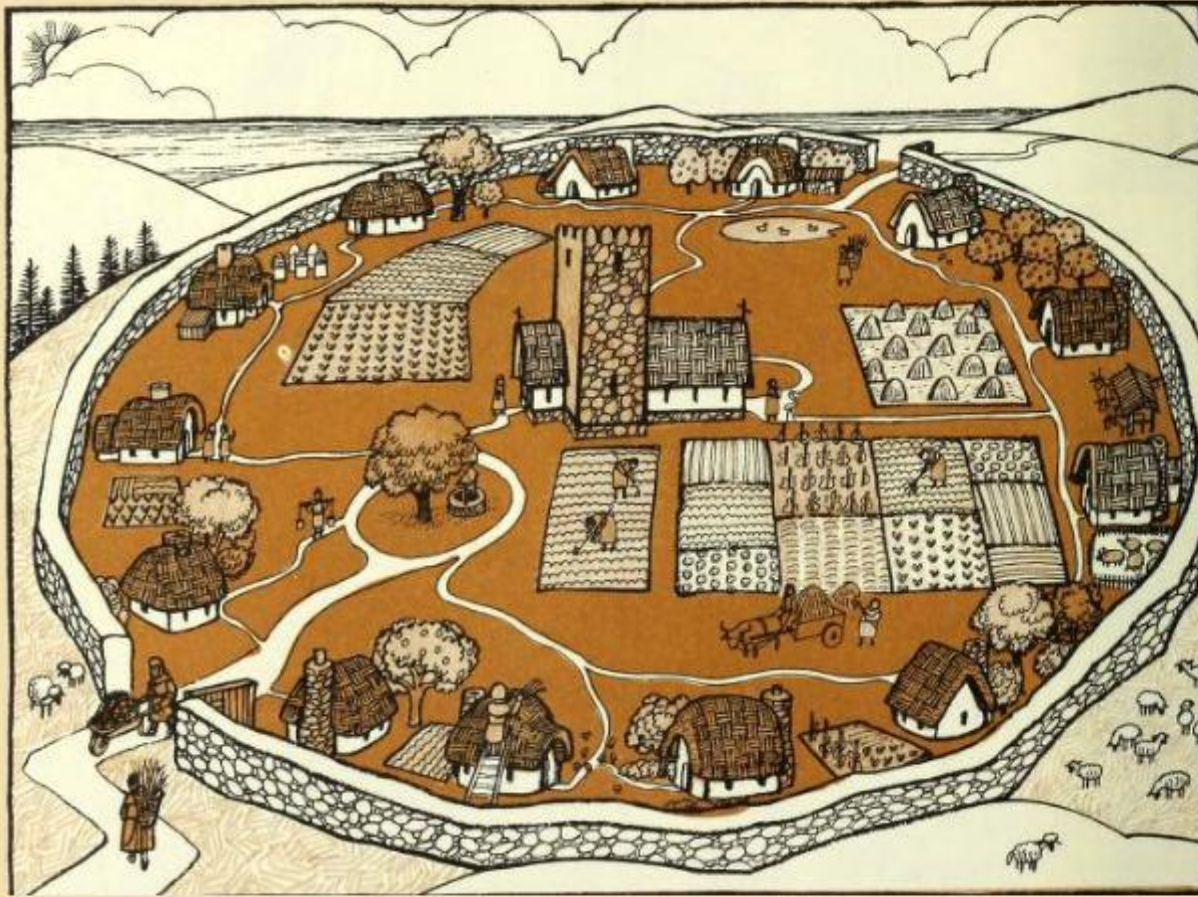
कोलंबा और उसके दोस्तों ने वहां एक चर्च बनाया और उसके चारों ओर प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक, कुल तेरह झोपड़ियाँ बनायीं. उन झोपड़ियों के चारों ओर उन्होंने एक दीवार बनाई. यह उनका शहर था जहाँ सब लोग एक-परिवार जैसे रहते थे. समय बीतने के साथ-साथ और भी लोग उस परिवार में शामिल हुए, क्योंकि कोलंबा को न केवल अपने पड़ौसियों से बल्कि आसपास के द्वीपों के लोगों, यहां तक कि स्कॉटलैंड के लोगों से भी दोस्ती करने की जल्दी थी. उसने पूरे उत्तर में यात्रा की, प्रचार किया और छोटे-छोटे चर्च शुरू किए. एक बार वह स्कॉटलैंड की पूरी चौड़ाई चला और उसने वहां के राजा को ईसाई बनने के लिए राजी किया.

बेशक, कोलंबा को अपने वतन आयरलैंड की बहुत याद आती थी. हरेक पक्षी जो दक्षिण की ओर उड़ता, वो कोलंबा को उसके देश की याद दिलाता. अब वो नई पुस्तकों की खुशी से भी बेगाना था. फिर भी उसके पास एक बाइबल थी, जो उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक थी. कोलंबा ने यह तय किया कि प्रत्येक चर्च के पास अपनी बाइबल की प्रति होनी चाहिए. इसलिए रात-दिन वो बाइबल की प्रतिलिपियाँ बनाता रहा. अपनी अथक लगन और मेहनत से कोलंबा ने अपने हाथों से बाइबल (न्यू-टेस्टामेंट) की तीन सौ प्रतियां बनाईं!!
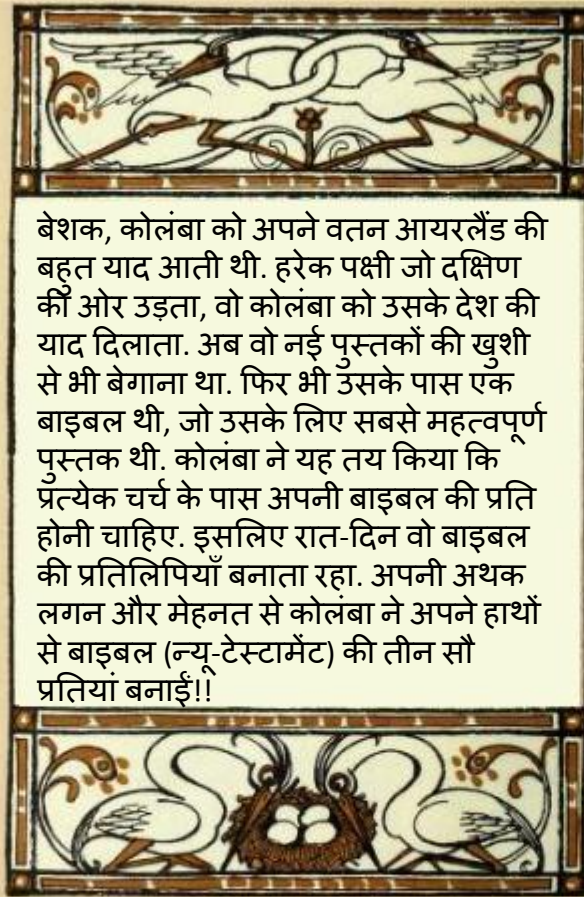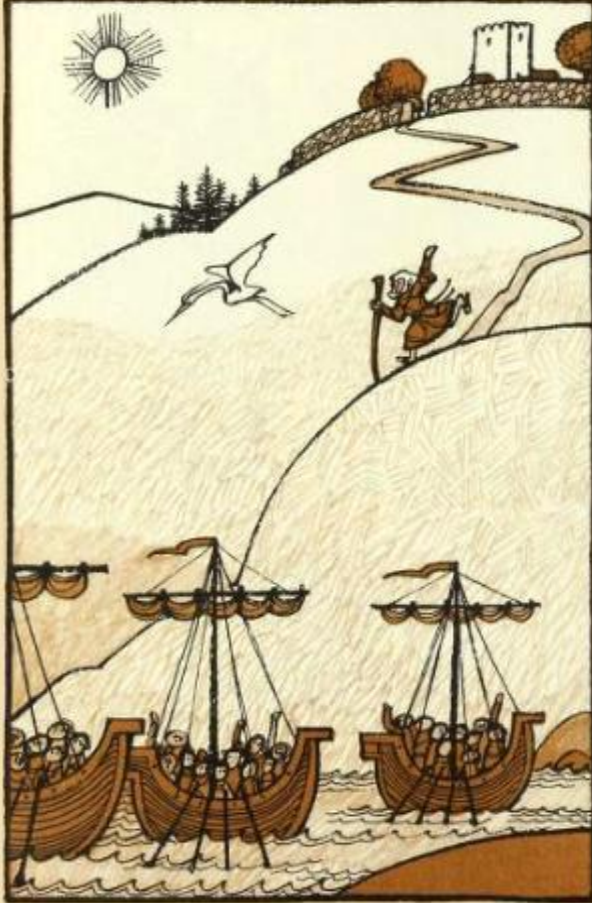
कोलंबा अब सत्तर साल का था और वो पिछले अट्ठाईस साल से इओना में रह रहा था. एक दिन आयरलैंड से नौकाओं का एक बेड़ा उसके द्वीप पर आकर उतरा. उनका स्वागत करने के लिए कोलंबा समुद्र के किनारे गया. उन नावों में बीस बिशप, चालीस पुजारी, और तीस भिक्षु थे. सभी नब्बे लोग आयरिश थे!

कोलंबा ने सभी को अपने गले लगाया. एक बिशप ने उनके आने का कारण समझाया. आयरलैंड में तमाम मुश्किलें और परेशानियां थीं. उनका कारण कहानी सुनाने वाले "बार्ड" थे. वे बहुत लालची हो गए थे, वे अब सिक्कों से संतुष्ट नहीं होते थे. उन्होंने राजा को आज्ञा दी और उससे शाही कंगन माँगा. और अगर राजा ने इनकार किया तो "बार्ड" ने राजा के खिलाफ गीत गाने की धमकी दी, जिससे राजा पूरे राज्य में अपमानित होता. उसके बाद एक विशाल बैठक बुलाई गई, जिसमें सभी कहानी सुनाने वाले "बार्ड" को देश से निकाले जाना तय हुआ.

बिशप्स को सुनकर, कोलंबा के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. भला "बार्ड" इतना बुरा व्यवहार कैसे कर सकते थे? लेकिन देश निकाला! उनको निकालने से आयरलैंड की छवि धूल में मिल जाएगी. "कहानियों के बिना, गानों के बिना, आयरिश लोगों का क्या हश्र होगा?" उसकी कल्पना करना भी मुश्किल थी. "तुम हमारे साथ वापस चलो," बिशप, पुजारियों और भिक्षुओं ने कोलंबा से भीख मांगी.
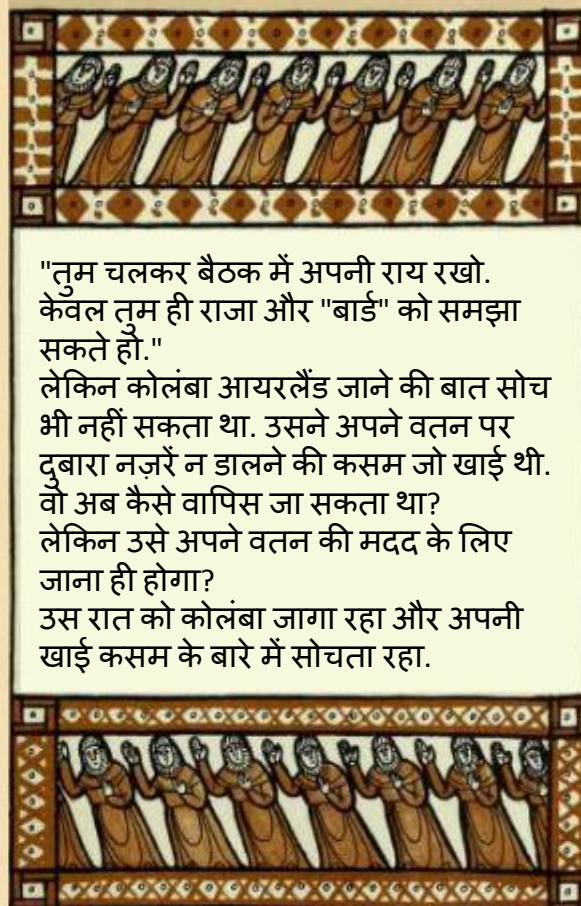
"तुम चलकर बैठक में अपनी राय रखो. केवल तुम ही राजा और "बार्ड" को समझा सकते हो."
लेकिन कोलंबा आयरलैंड जाने की बात सोच भी नहीं सकता था. उसने अपने वतन पर दुबारा नज़रें न डालने की कसम जो खाई थी. वो अब कैसे वापिस जा सकता था?
लेकिन उसे अपने वतन की मदद के लिए जाना ही होगा?
उस रात को कोलंबा जागा रहा और अपनी खाई कसम के बारे में सोचता रहा.
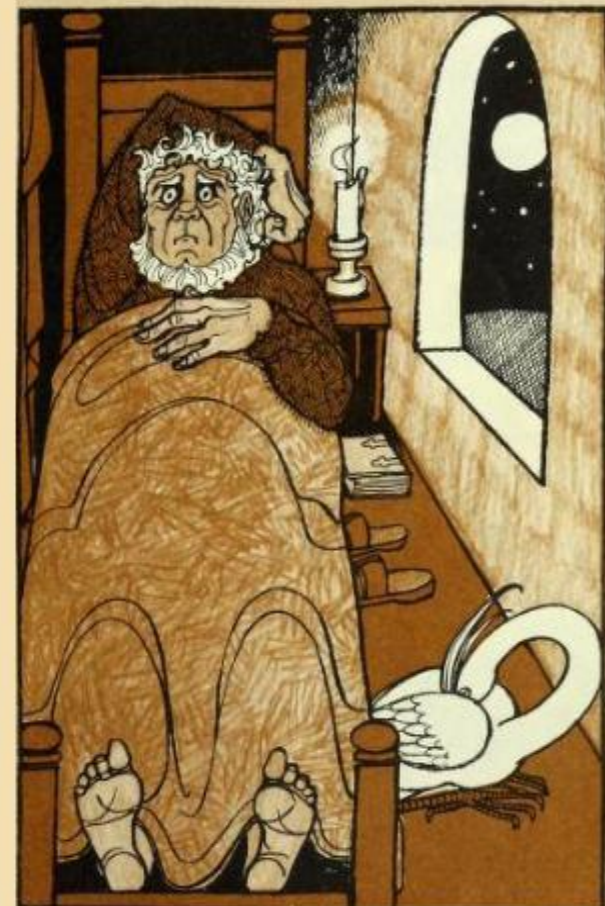
आखिर में उन्हें एक उत्तर मिला. उसने आयरलैंड पर पैर न रखने की कसम नहीं खाई थी. उसने अपने देश पर नज़र न डालने की कसम ज़रूर खाई थी. इसलिए कोलंबा ने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली और बिशप और पुजारियों और भिक्षुओं के साथ वापस आयरलैंड चला. वो पहली नाव के आगे वाले छोर पर जाकर बैठ गया. हालांकि वो देख नहीं सकता था, पर वो खुद को आयरलैंड के करीब पहुँचते हुए ज़रूर महसूस करना चाहता था.
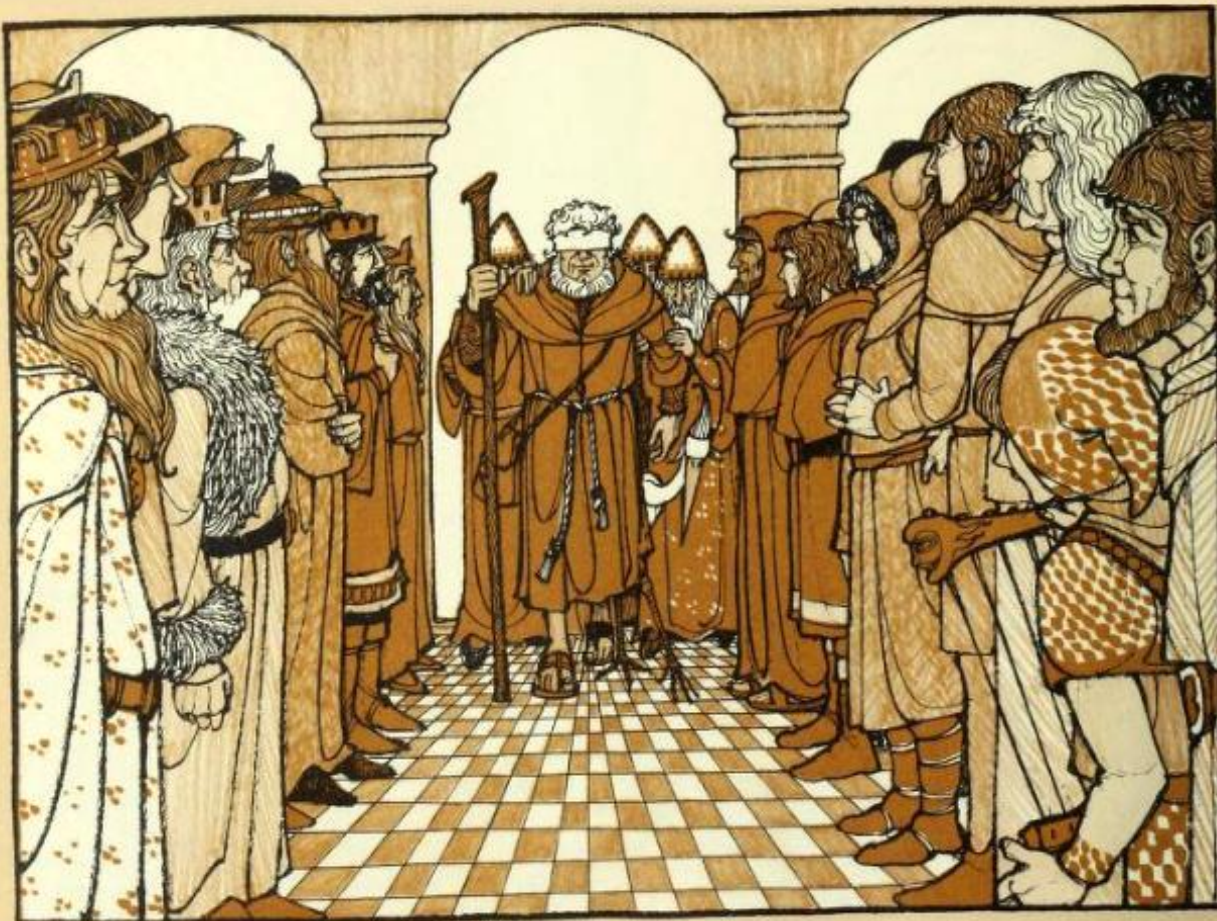
कोलंबा के आने से पहले ही बैठक के सहभागी इकट्ठे हो चुके थे. आयरलैंड के सभी स्थानीय राजाओं के अलावा वहां सभी रईस, चर्च वाले, और बारह सौ लोग वहां मौजूद थे. जब उन्होंने कोलंबा को देखा, जिसकी आँखों पर पट्टी बंधी थी और जो उनका नेतृत्व करने जा रहा था, तो वे उसके सम्मान में उठे. और जब कोलंबा ने बोलना शुरू किया, तो वे एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए. न तो आँखों की पट्टी और न ही समय बीतने का, कोलंबा की अद्भुत आवाज पर कोई फर्क पड़ा था. उसकी आवाज़ और भाषण पहले की तरह ही बुलंद था. कोलंबा के अलावा ऐसा कोई नहीं था जिसके शब्द राजाओं और कहानी सुनाने वाले "बार्ड" दोनों को संतुष्ट करते. बैठक के अंत में कहानी सुनाने वाले "बार्ड" ने नियमों को स्वीकार किया. अब वे देश में रह सकते थे. और राजाओं ने कहानी सुनाने वाले "बार्ड" को रहने देने की सहमति व्यक्त की.

फिर कोलंबा इओना वापस लौटा. अपने वतन लौटने की उसकी इच्छा पूरी हो गई थी. उसने अपने पैरों के नीचे एक बार फिर से मुलायम आयरिश मिट्टी महसूस की थी. उसने अपनी जमीन की सोंधी खुशबू सूंघी थी. उसने "बार्ड" से पुराने गाने और आयरिश कहानियां सुनी थीं. और अब वह अपने द्वीप वापस जाकर अपनी आंखों की पट्टी खोलने की जल्दी में था. अब उसके बस्ते में एक नई पुस्तक थी जो बिशपों ने उसे भेंट की थी. वो निश्चित रूप से कोलंबा के लिए एक बहुत बड़ा उपहार था.

कोलंबा छह साल तक और जीवित रहा. वो अपने अपने परिवार और अपने काम से खुश था. मरते समय वो वही काम कर रहा था जो उसे सबसे प्रिय था. उसके सामने उसका चर्मपत्र, उसकी कलम और स्याही थी. एक वाक्य की नकल करते हुए बीच में उसकी मृत्यु हुई थी.

लेखक का नोट

कोलंबा 521 में पैदा हुआ एक आयरिश संत था.
यह कहानी एक पुरानी किंवदंती से ली गई है,
जिसमें से अधिकांश निश्चित रूप से सच है.
कोलंबा अपने पुस्तकों के प्रति प्रेम, और पूरे स्कॉटलैंड
में अपने मिशनरी काम के लिए जाना जाता था.
वो और उसके साथी 563 में इओना में जाकर बसे थे.